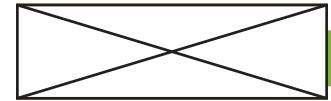


15 सूरदास के पद



(1)



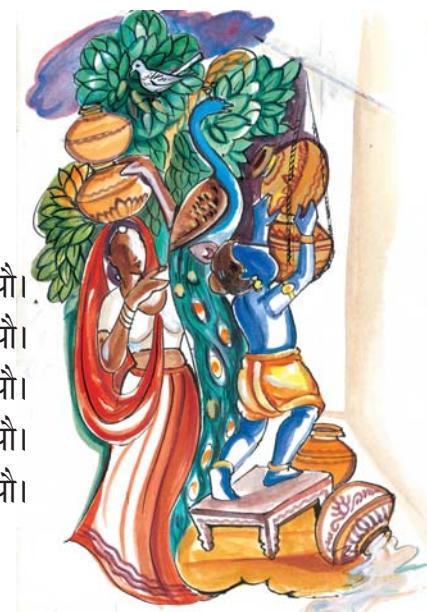
मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?

किती बार मोहि दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, है है लाँबी-मोटी।
काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै, नागिनी सी भुइँ लोटी।
काँचौ दूध पियावत पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।
सूर चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।

(2)

तैं लाल मेरौ माखन खायौ।

दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढ़ि-ढँड़ोरि आपही आयौ।
खोलि किवारि, पैठि मंदिर मैं, दूध-दही सब सखनि खवायौ।
ऊखल चढ़ि, सींके कौ लीन्हौ, अनभावत भुइँ मैं ढरकायौ।
दिन प्रति हानि होति गोरस की, यह ढोटा कौनैं ढँग लायौ।
सूर स्याम कौं हटकि न राखै तैं ही पूत अनोखौ जायौ।





प्रश्न-अभ्यास



पदों से

- बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?
- श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?
- दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन-से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं?
- ‘तैं ही पूत अनोखौ जायौ’— पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन-से भाव मुखरित हो रहे हैं?
- मक्खन चुराते और खाते समय श्रीकृष्ण थोड़ा-सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?
- दोनों पदों में से आपको कौन-सा पद अधिक अच्छा लगा और क्यों?



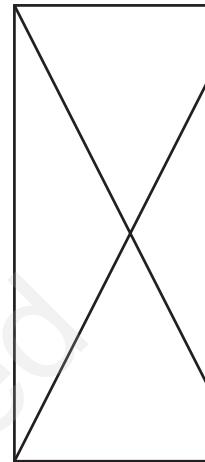
अनुमान और कल्पना

- दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी?
- ऐसा हुआ हो कभी कि माँ के मना करने पर भी घर में उपलब्ध किसी स्वादिष्ट वस्तु को आपने चुपके-चुपके थोड़ा-बहुत खा लिया हो और चोरी पकड़े जाने पर कोई बहाना भी बनाया हो। अपनी आपबीती की तुलना श्रीकृष्ण की बाल लीला से कीजिए।
- किसी ऐसी घटना के विषय में लिखिए जब किसी ने आपकी शिकायत की हो और फिर आपके किसी अभिभावक (माता-पिता, बड़ा भाई-बहिन इत्यादि) ने आपसे उत्तर माँगा हो।



भाषा की बात

- श्रीकृष्ण गोपियों का माखन चुरा-चुराकर खाते थे इसलिए उन्हें माखन चुरानेवाला भी कहा गया है। इसके लिए एक शब्द दीजिए।
- श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।



3. कुछ शब्द परस्पर मिलते-जुलते अर्थवाले होते हैं, उन्हें पर्यायवाची कहते हैं। और कुछ विपरीत अर्थवाले भी। समानार्थी शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं और विपरीतार्थक शब्द विलोम, जैसे—

- | | |
|--------------|--------------------------|
| पर्यायवाची— | चंद्रमा—शशि, इंदु, राका |
| | मधुकर—भ्रमर, भौंगा, मधुप |
| | सूर्य—रवि, भानु, दिनकर |
| विपरीतार्थक— | दिन—रात |
| | श्वेत—श्याम |
| | शीत—उष्ण |

पाठों से दोनों प्रकार के शब्दों को खोजकर लिखिए।

शब्दार्थ

अजहूँ	— आज भी	हरि-हलधर—	कृष्ण-बलराम
बल	— बलराम	जोटी	— जोड़ी
बेनी	— चोटी	पैठि	— घुसकर
है	— होगी	सींके	— छींका जिसमें दूध-दही आदि रखा जाता है
काढ़त	— बाल बनाना	गोरस	— गाय के दूध से बने पदार्थ दही, मक्खन, घी आदि
गुहत	— गूँथना	ढोटा	— लड़का
भुइँ	— पृथ्वी, भूमि		
लोटी	— लोटने लगी		
पचि-पचि	— बार-बार		

